



Mr sarvesh yadav ji

31 Aug 1969

08:15 PM

Mainpuri

Model: Web-MyKundli

Order No: 120458901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 31/08/1969
दिन _____: रविवार
जन्म समय _____: 20:15:00 घंटे
इष्ट _____: 35:56:19 घटी
स्थान _____: Mainpuri
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 27:14:00 उत्तर
रेखांश _____: 79:01:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:13:56 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 20:01:04 घंटे
वेलान्तर _____: -00:00:23 घंटे
साम्पातिक काल _____: 18:39:28 घंटे
सूर्योदय _____: 05:52:28 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:35:41 घंटे
दिनमान _____: 12:43:13 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 14:34:18 सिंह
लग्न के अंश _____: 20:20:25 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मीन - गुरु
राशि-स्वामी _____: मेष - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: अश्विनी - 3
नक्षत्र स्वामी _____: केतु
योग _____: वृद्धि
करण _____: तैत्तिरीय
गण _____: देव
योनि _____: अश्व
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: सिंह
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: चो-चोलुक्य
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कन्या

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1891	भाद्रपद	9
पंजाबी	संवत : 2026	भाद्रपद	16
बंगाली	सन् : 1376	भाद्रपद	15
तमिल	संवत : 2026	आवनी	16
केरल	कोल्लम : 1145	चिंगम	15
नेपाली	संवत : 2026	भाद्रपद	16
चैत्रादि	संवत : 2026	भाद्रपद	कृष्ण 4
कार्तिकादि	संवत : 2026	श्रावण	कृष्ण 4

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 4
 तिथि समाप्ति काल _____ : 08:12:16
 जन्म तिथि _____ : 5
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : अश्विनी
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 28:46:03 घंटे
 जन्म योग _____ : अश्विनी
 सूर्योदय कालीन योग _____ : वृद्धि
 योग समाप्ति काल _____ : 26:02:45 घंटे
 जन्म योग _____ : वृद्धि
 सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
 करण समाप्ति काल _____ : 08:12:16 घंटे
 जन्म करण _____ : तैतिल
 भयात _____ : 39:30:12
 भभोग _____ : 60:47:51
 भोग्य दशा काल _____ : केतु 2 वर्ष 5 मा 3 दि

घात चक्र

मास _____ : कार्तिक
 तिथि _____ : 1-6-11
 दिन _____ : रविवार
 नक्षत्र _____ : मघा
 योग _____ : विष्कुम्भ
 करण _____ : बव
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : मृग
 लग्न _____ : मेष
 सूर्य _____ : कर्क
 चन्द्र _____ : मेष
 मंगल _____ : सिंह
 बुध _____ : वृष
 गुरु _____ : कन्या
 शुक्र _____ : तुला
 शनि _____ : मिथुन
 राहु _____ : वृश्चिक

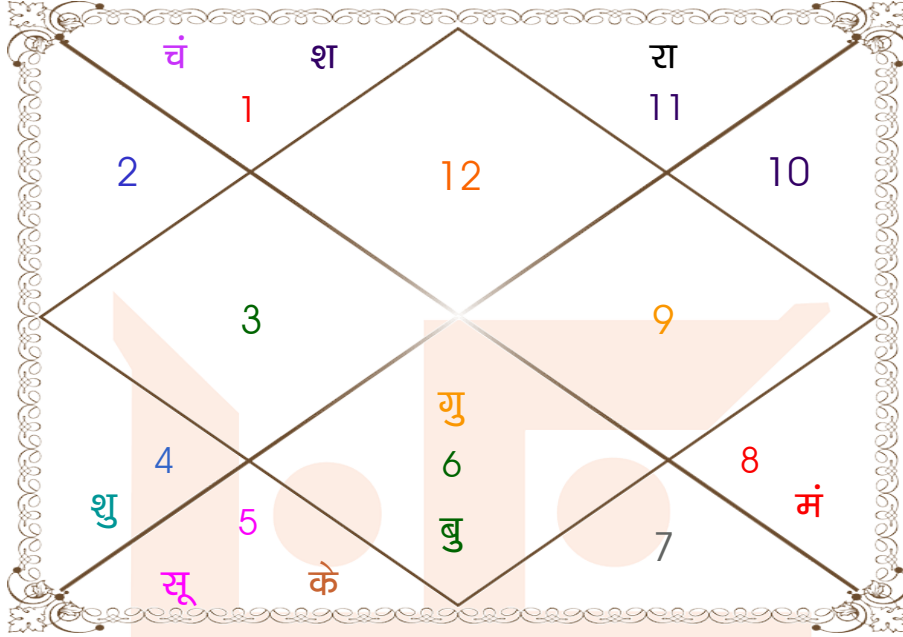


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

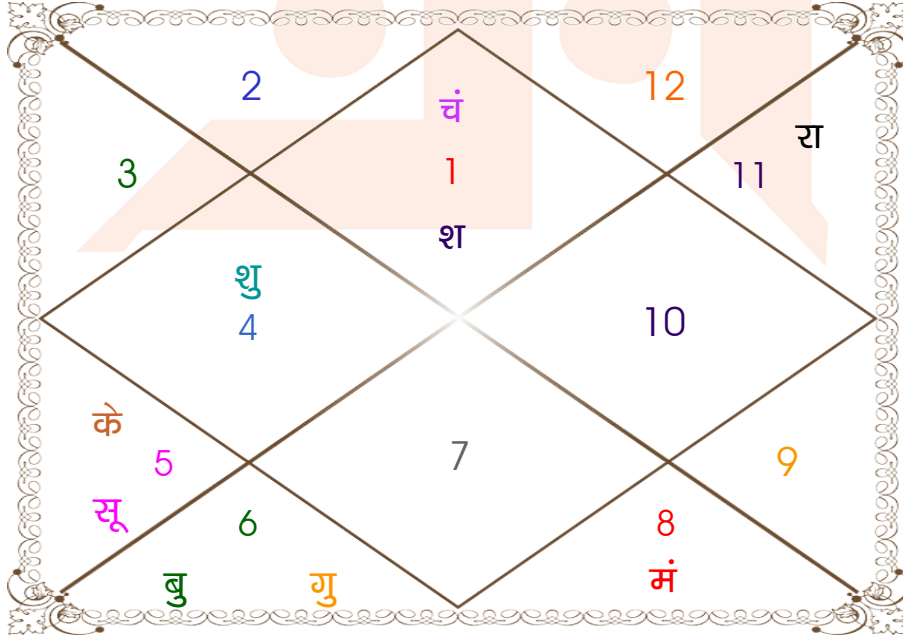


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

ल	श चं		
रा			शु
			के सू
	मं		गु बु

लग्न कुंडली

	श चं	ल
		रा
शु		
सू के	बु गु	मं

विंशोत्तरी
केतु 2वर्ष 5मा 3दि
केतु

31/08/1969

03/02/2085

केतु	04/02/1972
शुक्र	04/02/1992
सूर्य	03/02/1998
चन्द्र	04/02/2008
मंगल	04/02/2015
राहु	03/02/2033
गुरु	03/02/2049
शनि	04/02/2068
बुध	03/02/2085

योगिनी
भ्रामरी 1वर्ष 4मा 19दि
संकटा

19/01/2025

19/01/2033

संकटा	31/10/2026
मंगला	20/01/2027
पिंगला	01/07/2027
धान्या	01/03/2028
भ्रामरी	19/01/2029
भद्रिका	01/03/2030
उल्का	01/07/2031
सिद्धा	19/01/2033



FUTUREPOINT
Astro Solutions



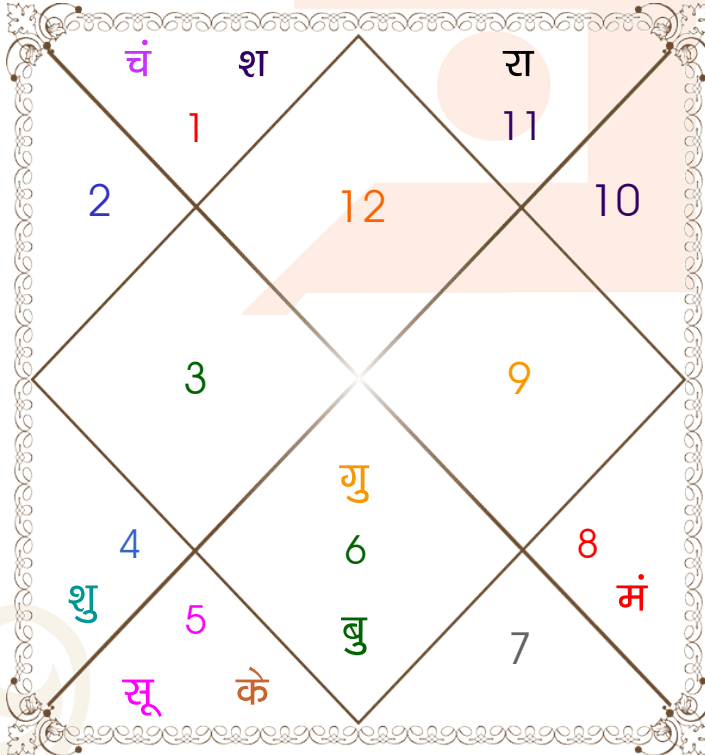
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	20:20:25	498:22:45	रेवती	2	27	गुरु	बुध	शुक्र	---
सूर्य			सिंह	14:34:18	00:58:02	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	मूलत्रिकोण
चंद्र			मेष	08:42:36	13:05:48	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	सम राशि
मंगल			वृश्चि	24:45:08	00:31:21	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	स्वराशि
बुध			कन्या	11:30:37	01:03:49	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	मंगल	उच्च राशि
गुरु			कन्या	14:41:01	00:12:01	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	शत्रु राशि
शुक्र			कर्क	09:31:15	01:11:06	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	शुक्र	शत्रु राशि
शनि	व		मेष	15:25:11	00:01:05	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	शुक्र	नीच राशि
राहु			कुंभ	27:42:20	00:01:27	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
केतु			सिंह	27:42:20	00:01:27	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	चंद्र	शत्रु राशि
हर्ष			कन्या	09:18:04	00:03:31	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	---
नेप			वृश्चि	02:39:37	00:00:46	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	---
प्लूटो			कन्या	00:51:33	00:02:09	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	राहु	---
दशम भाव			धनु	15:38:00	--	पूर्वाषाढा	--	20	गुरु	शुक्र	सूर्य	--

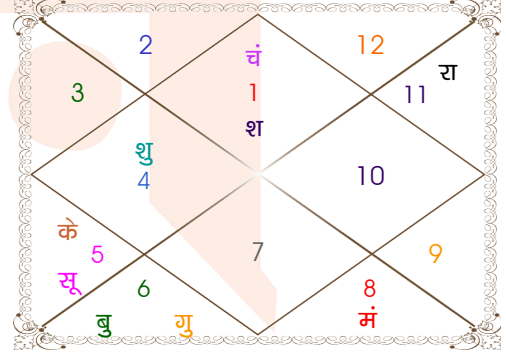
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:26:03

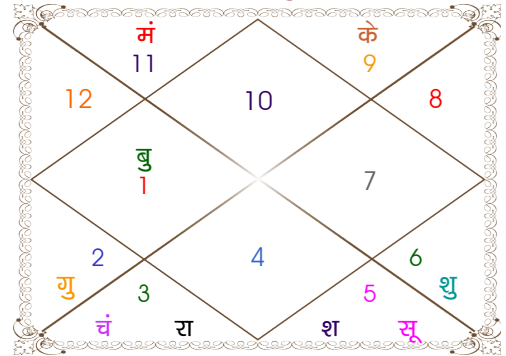
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मीन 04:33:21	मीन 20:20:25
2	मेष 04:33:21	मेष 18:46:17
3	वृष 02:59:13	वृष 17:12:09
4	मिथुन 01:25:05	मिथुन 15:38:00
5	कर्क 01:25:05	कर्क 17:12:09
6	सिंह 02:59:13	सिंह 18:46:17
7	कन्या 04:33:21	कन्या 20:20:25
8	तुला 04:33:21	तुला 18:46:17
9	वृश्चिक 02:59:13	वृश्चिक 17:12:09
10	धनु 01:25:05	धनु 15:38:00
11	मकर 01:25:05	मकर 17:12:09
12	कुम्भ 02:59:13	कुम्भ 18:46:17

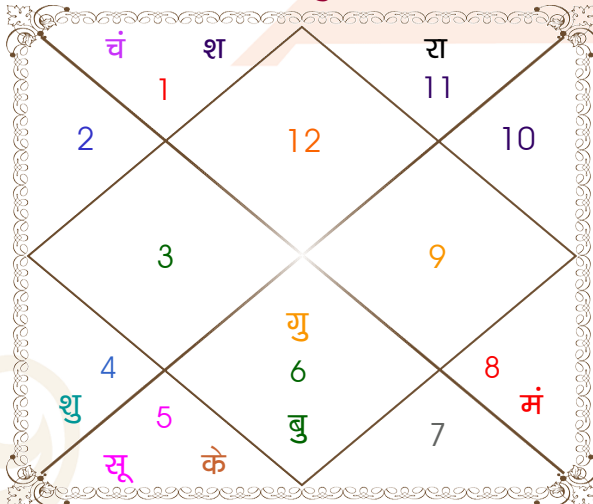
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	20:20:25
2	मेष	25:03:28
3	वृष	21:49:27
4	मिथुन	15:38:00
5	कर्क	10:39:31
6	सिंह	11:09:48
7	कन्या	20:20:25
8	तुला	25:03:28
9	वृश्चिक	21:49:27
10	धनु	15:38:00
11	मकर	10:39:31
12	कुम्भ	11:09:48

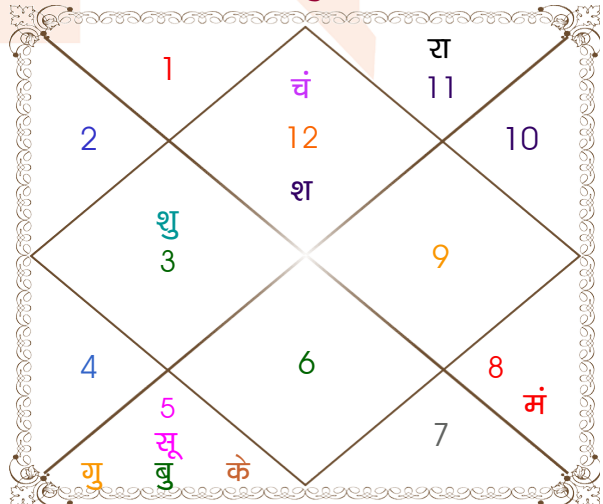
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 2 वर्ष 5 मास 3 दिन

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
31/08/1969	04/02/1972	04/02/1992	03/02/1998	04/02/2008
04/02/1972	04/02/1992	03/02/1998	04/02/2008	04/02/2015
00/00/0000	शुक्र 05/06/1975	सूर्य 23/05/1992	चंद्र 05/12/1998	मंगल 02/07/2008
00/00/0000	सूर्य 05/06/1976	चंद्र 22/11/1992	मंगल 06/07/1999	राहु 21/07/2009
00/00/0000	चंद्र 03/02/1978	मंगल 30/03/1993	राहु 04/01/2001	गुरु 26/06/2010
00/00/0000	मंगल 06/04/1979	राहु 22/02/1994	गुरु 06/05/2002	शनि 05/08/2011
00/00/0000	राहु 05/04/1982	गुरु 11/12/1994	शनि 05/12/2003	बुध 01/08/2012
31/08/1969	गुरु 04/12/1984	शनि 23/11/1995	बुध 05/05/2005	केतु 29/12/2012
गुरु 29/12/1969	शनि 04/02/1988	बुध 28/09/1996	केतु 05/12/2005	शुक्र 28/02/2014
शनि 07/02/1971	बुध 05/12/1990	केतु 03/02/1997	शुक्र 05/08/2007	सूर्य 06/07/2014
बुध 04/02/1972	केतु 04/02/1992	शुक्र 03/02/1998	सूर्य 04/02/2008	चंद्र 04/02/2015
राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
04/02/2015	03/02/2033	03/02/2049	04/02/2068	03/02/2085
03/02/2033	03/02/2049	04/02/2068	03/02/2085	00/00/0000
राहु 17/10/2017	गुरु 24/03/2035	शनि 07/02/2052	बुध 03/07/2070	केतु 02/07/2085
गुरु 11/03/2020	शनि 05/10/2037	बुध 17/10/2054	केतु 30/06/2071	शुक्र 01/09/2086
शनि 16/01/2023	बुध 11/01/2040	केतु 26/11/2055	शुक्र 30/04/2074	सूर्य 07/01/2087
बुध 05/08/2025	केतु 16/12/2040	शुक्र 26/01/2059	सूर्य 06/03/2075	चंद्र 08/08/2087
केतु 23/08/2026	शुक्र 17/08/2043	सूर्य 07/01/2060	चंद्र 05/08/2076	मंगल 04/01/2088
शुक्र 23/08/2029	सूर्य 05/06/2044	चंद्र 08/08/2061	मंगल 02/08/2077	राहु 22/01/2089
सूर्य 18/07/2030	चंद्र 05/10/2045	मंगल 17/09/2062	राहु 19/02/2080	गुरु 31/08/2089
चंद्र 17/01/2032	मंगल 11/09/2046	राहु 24/07/2065	गुरु 27/05/2082	00/00/0000
मंगल 03/02/2033	राहु 03/02/2049	गुरु 04/02/2068	शनि 03/02/2085	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 2 वर्ष 5 मा 13 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - केतु 05/08/2025 23/08/2026	राहु - शुक्र 23/08/2026 23/08/2029	राहु - सूर्य 23/08/2029 18/07/2030	राहु - चंद्र 18/07/2030 17/01/2032	राहु - मंगल 17/01/2032 03/02/2033
केतु 27/08/2025 शुक्र 30/10/2025 सूर्य 18/11/2025 चंद्र 20/12/2025 मंगल 12/01/2026 राहु 10/03/2026 गुरु 30/04/2026 शनि 30/06/2026 बुध 23/08/2026	शुक्र 22/02/2027 सूर्य 18/04/2027 चंद्र 18/07/2027 मंगल 20/09/2027 राहु 02/03/2028 गुरु 26/07/2028 शनि 16/01/2029 बुध 20/06/2029 केतु 23/08/2029	सूर्य 08/09/2029 चंद्र 06/10/2029 मंगल 25/10/2029 राहु 13/12/2029 गुरु 26/01/2030 शनि 19/03/2030 बुध 05/05/2030 केतु 24/05/2030 शुक्र 18/07/2030	चंद्र 01/09/2030 मंगल 03/10/2030 राहु 25/12/2030 गुरु 08/03/2031 शनि 02/06/2031 बुध 19/08/2031 केतु 20/09/2031 शुक्र 20/12/2031 सूर्य 17/01/2032	मंगल 08/02/2032 राहु 06/04/2032 गुरु 27/05/2032 शनि 26/07/2032 बुध 19/09/2032 केतु 11/10/2032 शुक्र 14/12/2032 सूर्य 02/01/2033 चंद्र 03/02/2033
गुरु - गुरु 03/02/2033 24/03/2035	गुरु - शनि 24/03/2035 05/10/2037	गुरु - बुध 05/10/2037 11/01/2040	गुरु - केतु 11/01/2040 16/12/2040	गुरु - शुक्र 16/12/2040 17/08/2043
गुरु 18/05/2033 शनि 18/09/2033 बुध 07/01/2034 केतु 21/02/2034 शुक्र 01/07/2034 सूर्य 09/08/2034 चंद्र 13/10/2034 मंगल 27/11/2034 राहु 24/03/2035	शनि 18/08/2035 बुध 27/12/2035 केतु 19/02/2036 शुक्र 22/07/2036 सूर्य 06/09/2036 चंद्र 22/11/2036 मंगल 15/01/2037 राहु 03/06/2037 गुरु 05/10/2037	बुध 30/01/2038 केतु 19/03/2038 शुक्र 04/08/2038 सूर्य 15/09/2038 चंद्र 23/11/2038 मंगल 10/01/2039 राहु 14/05/2039 गुरु 01/09/2039 शनि 11/01/2040	केतु 30/01/2040 शुक्र 27/03/2040 सूर्य 13/04/2040 चंद्र 12/05/2040 मंगल 01/06/2040 राहु 22/07/2040 गुरु 05/09/2040 शनि 29/10/2040 बुध 16/12/2040	शुक्र 28/05/2041 सूर्य 15/07/2041 चंद्र 05/10/2041 मंगल 30/11/2041 राहु 26/04/2042 गुरु 02/09/2042 शनि 04/02/2043 बुध 22/06/2043 केतु 17/08/2043
गुरु - सूर्य 17/08/2043 05/06/2044	गुरु - चंद्र 05/06/2044 05/10/2045	गुरु - मंगल 05/10/2045 11/09/2046	गुरु - राहु 11/09/2046 03/02/2049	शनि - शनि 03/02/2049 07/02/2052
सूर्य 01/09/2043 चंद्र 25/09/2043 मंगल 12/10/2043 राहु 25/11/2043 गुरु 03/01/2044 शनि 18/02/2044 बुध 31/03/2044 केतु 17/04/2044 शुक्र 05/06/2044	चंद्र 15/07/2044 मंगल 13/08/2044 राहु 25/10/2044 गुरु 29/12/2044 शनि 16/03/2045 बुध 24/05/2045 केतु 21/06/2045 शुक्र 10/09/2045 सूर्य 05/10/2045	मंगल 25/10/2045 राहु 15/12/2045 गुरु 29/01/2046 शनि 24/03/2046 बुध 11/05/2046 केतु 31/05/2046 शुक्र 27/07/2046 सूर्य 13/08/2046 चंद्र 11/09/2046	राहु 20/01/2047 गुरु 17/05/2047 शनि 03/10/2047 बुध 04/02/2048 केतु 26/03/2048 शुक्र 19/08/2048 सूर्य 02/10/2048 चंद्र 14/12/2048 मंगल 03/02/2049	शनि 27/07/2049 बुध 30/12/2049 केतु 04/03/2050 शुक्र 03/09/2050 सूर्य 28/10/2050 चंद्र 28/01/2051 मंगल 02/04/2051 राहु 13/09/2051 गुरु 07/02/2052



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	1
मित्र अंक	1, 4, 6
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी



FUTUREPOINT
Astro Solutions

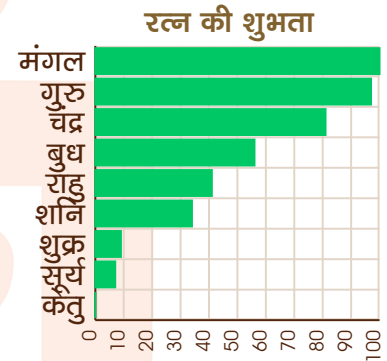


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	भाग्योदय, धन
पुखराज	गुरु	97%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	81%	धन, सन्तति सुख
पन्ना	बुध	56%	दम्पति, सुख
गोमेद	राहु	41%	व्यय, धन हानि
नीलम	शनि	34%	धन हानि, हानि, व्यय
हीरा	शुक्र	9%	सन्तति कष्ट, पराक्रम हानि, दुर्घटना
माणिक्य	सूर्य	7%	शत्रु व रोग
लहसुनिया	केतु	0%	शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	04/02/1972	0%	69%	100%	56%	97%	22%	9%	16%	19%
शुक्र	04/02/1992	0%	69%	100%	62%	97%	34%	47%	52%	6%
सूर्य	03/02/1998	32%	88%	100%	56%	100%	0%	9%	16%	0%
चंद्र	04/02/2008	19%	94%	100%	62%	97%	9%	34%	16%	0%
मंगल	04/02/2015	19%	88%	100%	38%	100%	9%	34%	16%	6%
राहु	03/02/2033	0%	69%	92%	56%	97%	22%	47%	58%	0%
गुरु	03/02/2049	19%	88%	100%	38%	100%	0%	34%	41%	0%
शनि	04/02/2068	0%	69%	92%	62%	97%	22%	55%	52%	0%
बुध	03/02/2085	19%	69%	100%	69%	97%	22%	34%	41%	0%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	31/08/1969-28/04/1971	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	28/04/1971-10/06/1973	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/1975-07/09/1977	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया

फल

अशुभ
शुभ
सम
सम
सम

क्षेत्र

धन
पराक्रम
सन्तति कष्ट
बदनामी
स्वास्थ्य



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से अष्टम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा आप पित या गर्मी के द्वारा शारीरिक परेशानी की अनुभूति करेंगे। पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा तथा स्वभाव से यदा कदा वे उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकती हैं। इससे परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्पकालिक रहेगा तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपको अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही विवाह में भी किंचित मात्रा में विलम्ब हो सकता है लेकिन अन्त में आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका दाम्पत्य जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से मंगल का दोष अल्प माना जाता है अतः सामान्यतया शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम ही रहेगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम तथा पराक्रम से ही सफलता होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपके आय स्रोतों में उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप समर्थ रहेंगे। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे साथ ही वाणी में भी ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा परन्तु धनऐश्वर्य की स्थिति उत्तम रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की स्थिति के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग सामान्य रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा मन में आत्मविश्वास का भाव बना रहेगा। आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसी

मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली से आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में शनि राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी। एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करने में आप तत्पर रहेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जातक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान्, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, कोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन, आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रुग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हार्दिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरे की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान

करके सुखानुभूति करेंगे।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

बुध

सातवें भाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

सप्तम भाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान् एवं सन्तोषी होता है।

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

षष्ठभावे में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(04/02/2015 - 03/02/2033)

राहु की अन्तर्दशा 04/02/2015 को आरंभ होकर 03/02/2033 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 साल है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु 12वें भाव में स्थित है। राहु की छठे भाव पर दृष्टि है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। आपको सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति, यात्रा, आराम और उच्च शिक्षा की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में आपको स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्या, यात्रा, व्यय तथा धार्मिक कार्यों की ओर आपका झुकाव होगा।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्या हो सकती है। राहु के शनि की राशि में होने के फलस्वरूप आपको चिरकालिक समस्या, वातजन्य रोग, पीठ में दर्द तथा पैरों की समस्या हो सकती है। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको विषाणुजन्य संक्रामक रोग, बुखार, स्नायविक-दुर्बलता तथा आँख में पीड़ा हो सकती है। कुछ उपाय कर इनमें से बहुतों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक रहेगी। आपको कुछ व्यय, धन-संचय में कठिनाई हो सकती है। उचित आर्थिक प्रबन्धन की आवश्यकता है। जहाँ तक सम्भव हो सहे के लेन-देन से बचें। बिरोधियों ओर विदेशी स्रोतों से कुछ लाभ हो सकता है। जीविका-व्यवसाय के लिए विज्ञान, विमान उड्डयन, ज्योतिष, विद्युत इन्जीनियरिंग, पुरातत्त्व, रेडियोग्राफी आदि का चयन कर सकते हैं। चमड़े के सामान, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक सामान, एण्टीबायोटिक्स, रसायन आदि का व्यापार लाभदायक रहेगा। नौकरी पेशा लोगों का विदेशी स्रोतों से कारोबार होगा। आप अनुबन्ध पत्र पर हस्ताक्षर करेंगे और आपको गैर पारम्परिक स्रोतों से लाभ हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को उनके कार्यों में सफलता, सम्पत्ति तथा अच्छा लाभ होगा। कार्य के सिलसिले में आपका छोटी यात्रा हो सकती है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में कुछ सुख मिलेगा। कुछ धन-संचय हो सकता है किन्तु जमीन-जायदाद के सभी लेन-देनों में सावधानी बरतनी चाहिए। इस दशा के दौरान आपकी दूर की यात्रा हो सकती है। विदेश यात्रा भी सम्भव है।

शिक्षा :

आपको अपनी श्रेणी को बनाये रखने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। आप अपने शिक्षा-संकाय या संस्थान में परिवर्तन कर सकते हैं। आपकी शोध-परियोजना सफल होगी। विज्ञान, दवा, विमान-इन्जीनियरिंग, विधि तथा बौद्धिक कार्यों से सम्बद्ध विषयों में आपकी रुचि होगी।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों का कुछ परिवर्तन होगा और उन्हें आपके सहयोग की आवश्यकता होगी। आपके जीवनसाथी को लाभ, विरोधियों पर विजय, कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्याएं तथा यात्रा होगी। आपकी माता की दूर की यात्रा और तीर्थाटन होगा जबकि आपके पिता की जमीन जायदाद में वृद्धि होगी तथा आराम मिलेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को यश और ख्याति की प्राप्ति, तीर्थाटन और लाभ में वृद्धि होगी जबकि बड़ों को लाभ वृद्धि, उत्तम शिक्षा तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपकी यात्रा, व्यय और परिवर्तन होगा। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी जीवन-वृत्ति में प्रगति तथा यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शनि की अन्तर्दशा में लाभ, व्यय और दूर की यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा के दौरान परिवार से सुख, उत्तम शिक्षा, विवाह, तथा साझेदार लाभ होगा। केतु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ समस्या हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा, परिवर्तन तथा कुछ स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। सूर्य की अन्तर्दशा में विरोधियों पर विजय होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान सन्तान सुख और सौभाग्य की प्राप्ति तथा शिशु-जन्म हो सकता है जबकि मंगल की अन्तर्दशा में सम्पत्ति, समृद्धि तथा सुख की प्राप्ति होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- राहु - बुध
(16/01/2023 - 05/08/2025)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/02/2015 को प्रारंभ होकर 03/02/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 16/01/2023 को प्रारंभ होकर 05/08/2025 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। सप्तम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विभिन्न विषयों जैसे गणित, ज्योतिष आदि का ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। धर्म में आस्था बढ़ेगी। सत्कार्यों में रुचि बढ़ेगी, वेषभूषा सुरुचिपूर्ण होगी। उद्योग, व्यापार आदि में महारत हासिल होगी। व्यक्तित्व और शरीर प्रभावशाली होगा। अधिक चालाकी या धोखाधड़ी की भावना से बचें।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - केतु
(05/08/2025 - 23/08/2026)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/02/2015 को प्रारंभ होकर 03/02/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 05/08/2025 को प्रारंभ होकर 23/08/2026 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। छठे भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। प्रसिद्ध बनेंगे, कोई आपका शत्रु नहीं होगा। कोई अलौकिक शक्ति आपको प्राप्त हो सकती है मगर चरित्र का ह्रास हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए केतु के वैदिक मंत्र के 8000 जाप करें।

शनिवार और मंगलवार को उपवास करें। उपवास के बाद हनुमान जी की उपासना करें, मीठा भोजन ग्रहण करें। नमक का सेवन न करें।

**अंतर्दशा :- राहु - शुक्र
(23/08/2026 - 23/08/2029)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/02/2015 को प्रारंभ होकर 03/02/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 23/08/2026 को प्रारंभ होकर 23/08/2029 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप रोमांटिक हो सकते हैं। राजनीति में दिलचस्पी हो सकती है। लोकप्रियता बढ़ेगी, पर्याप्त मित्र होंगे। योग्यता के बल पर धन कमाएंगे। सट्टेबाजी में भी लाभ हो सकता है। सरकार से पुरस्कार मिल सकता है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 60,000 (साठ हजार) जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - सूर्य
(23/08/2029 - 18/07/2030)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/02/2015 को प्रारंभ होकर 03/02/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 23/08/2029 को प्रारंभ होकर 18/07/2030 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठे भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। छठे भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी जन्मपत्री के बारहवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य निर्बल हो सकता है लेकिन प्रसिद्ध और सफल होंगे। राजनीति में भी कामयाब हो सकते हैं। पैसे की कोई कमी नहीं होगी और प्रत्येक परियोजना पूर्ण होगी। छाती और हृदय के रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- दूध और शहद का सेवन करें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
- आटा, गुड़ और तांबे के सिक्के दान करें।
- बहते पानी (नदी आदि) में तांबे के सिक्के डालें।